

जमि कॉर्बेट में टाइगर सफारी पर प्रतर्बिंध

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने जमि कॉर्बेट नेशनल पार्क के भीतर पेड़ों की कटाई और अनधिकृत नरिमाण गतविधियों में शामिल होने के लयि उत्तराखंड सरकार को फटकार लगाई ।

मुख्य बदि:

- सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार एक समति इस बात पर गौर करेगी कक्यादेश में राष्ट्रीय उद्यानों के बफर या सीमांत क्षेत्रों में बाघ सफारी की अनुमति दी जा सकती है ।
- शीर्ष न्यायालय ने केंद्र को पर्यावरण को होने वाली हानि को कम करने के उपायों का प्रस्ताव देने और जवाबदेह लोगों से क्षतपूरति की मांग करने के लयि एक समति स्थापति करने का भी नरिदेश दिया ।
- सर्वोच्च न्यायालय ने टाइगर रजिर्व में पेड़ों की अभूतपूर्व कटाई और पर्यावरणीय क्षतपर सरकार की खचिाई की । इसमें जमि कॉर्बेट में अवैध नरिमाण, पेड़ों की कटाई पर तीन महीने के भीतर स्टेटस रिपोर्ट मांगी है ।
- इससे पहले जनवरी में, सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय उद्यानों के भीतर बाघ सफारी स्थापति करने के राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) के प्रस्ताव को खारजि कर दिया था, जसिमें "पर्यटन-केंद्रति" दृषटकिण के बजाय "पशु-केंद्रति" दृषटकिण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया था ।
- न्यायालय का रुख राष्ट्रीय उद्यानों के भीतर वन्यजीवों के कल्याण और संरक्षण को प्राथमकिता देने के महत्त्व को रेखांकति करता है, जो पर्यटकों के आकर्षण पर पशुओं के लयि प्राकृतकि आवास बनाए रखने के सिद्धांत की पुष्टि करता है ।

जमि कॉर्बेट नेशनल पार्क

- यह उत्तराखंड के नैनीताल ज़िले में अवस्थति है । वर्ष 1973 में [प्रोजेक्ट टाइगर](#) की शुरुआत कॉर्बेट नेशनल पार्क (भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान) में हुई थी, जो ककॉर्बेट टाइगर रजिर्व का एक हसिसा है ।
 - इस राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना वर्ष 1936 में हैली नेशनल पार्क के रूप में की गई थी जसिका उद्देश्य लुप्तप्राय बंगाल टाइगर का संरक्षण करना था ।
 - इसका नाम जमि कॉर्बेट के नाम पर रखा गया है जनिहोंने इसकी स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमकि नभिाई थी ।
- इसके मुख्य क्षेत्र में कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान जबकि बफर ज़ोन में आरक्षति वन और साथ ही सोन नदी वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं ।
- रजिर्व का पूरा क्षेत्र पहाड़ी है और यह शवालकि तथा बाह्य हमिलय भूवैज्ञानकि प्रांतों के अंतरगत आता है ।
- रामगंगा, सोननदी, मंडल, पालेन और कोसी, रजिर्व से होकर बहने वाली प्रमुख नदरिाँ हैं ।
- 500 वर्ग किलोमीटर में फैला CTR 230 बाघों का वास-स्थान है और प्रतिसौ वर्ग किलोमीटर में 14 बाघों के साथ यह दुनिया का सबसे अधिक बाघ घनत्व वाला रजिर्व है ।

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)

- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन एक वैधानकि नकियाय है ।
- इसकी स्थापना वर्ष 2005 में टाइगर टास्क फोर्स की अनुशंसाओं के साथ की गई थी ।
- बाघ संरक्षण के सशक्तीकरण के लयि वर्ष 2006 में संशोधति [वन्यजीव \(संरक्षण\) अधिनियम, 1972](#) के सक्षम प्रावधानों के तहत इसे गठति कया गया था ।

